बसन्त

अखिल भारतीय चित्रकला प्रदर्शनी

03 से 09 फरवरी, 2025

कला दीर्घा, अन्तरदेशीय दृश्यकला पत्रिका

द सेन्ट्रम, लखनऊ

बसन्त

कला दीर्घा, अन्तरदेशीय दृश्यकला पत्रिका एवं
द सेन्ट्रम, लखनऊ का सहआयोजन

अखिल भारतीय चित्रकला प्रदर्शनी
03 से 09 फरवरी, 2025

समन्वयक
डॉ. अनीता वर्मा एवं सुमित कुमार

क्यूरेटर
डॉ. लीना मिश्र

प्रकाशक
कला दीर्घा, अन्तरदेशीय दृश्यकला पत्रिका
सी-361, राजाजीपुरम्, लखनऊ-226017

कला दीर्घा
International Journal of Visual ARTS

Dr Leena Misra
MA (Sanskrit, English & Psychology), M Ed, Ph D
Publisher
Kala Dirgha International Journal of Visual Arts
ISSN : 0976-1500 RNI No. UPBIL/2000/3395
C - 361, Rajajipuram, Lucknow- 226017, Mobile No. - 9839126836
Email : kaladirgha2000@gmail.com Blog : drleenamisra.blogspot.com)

दिनांक : 03 फरवरी 2025

बसन्त

अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी

द्रुमा सपुष्पाः सलिलं सपदम, स्त्रीय सकामाः पवनः सुगंधीः।
सुखाः प्रदोषाः दिवसाश्च रम्याः, सर्व प्रिये चारुतरं वसंते।।

(कालिदास – ऋतुसंहार)

बसन्त आ गया, धरा पर बिखरे बासन्ती रंगों और सुवासित पुष्पों से होकर आह्लादित करती बयार को महसूस करने की ऋतु। ज्ञान और कलाओं की देवी माँ शारदा की पूजा-अर्चना का दिन और धरा पर बिखरे बासन्ती-रंगों को महसूस करने की ऋतु।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

विद्या की देवी भगवती सरस्वती, जो कुंद के फूल, चन्द्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह धवल वर्ण की हैं और जो श्वेत वस्त्र धारण करती हैं, जिनके हाथ में वीणा-दण्ड शोभायमान है, जिन्होंने श्वेत कमलों पर आसन ग्रहण किया है तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर आदि देवताओं द्वारा जो सदा पूजित हैं, वही सम्पूर्ण जड़ता और अज्ञान को दूर कर देने वाली सरस्वती माँ हमारी रक्षा करें।

Salutations to Devi Saraswati, who is pure white like Jasmine, with the coolness of Moon, brightness of snow and shine like the garland of Pearls; and who is covered with pure white garments. Whose hands are adorned with Veena and blessings and who is seated on a pure white lotus, who is always adorned by Lord Brahma, Vishnu, Shiva and other deities. O Goddess Saraswati, please protect me and remove my ignorance.

भारत में प्रमुख ऋतुएँ चार होती हैं - गर्मी, वर्षा, शरद, और बसन्त। इन चार ऋतुओं में बसन्त ऋतु को विशेष स्थान प्राप्त है। इसे ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है क्योंकि यह ऋतु न केवल मौसम के लिहाज से बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। बसन्त ऋतु के आगमन से पूरी धरती नवीनीकरण और सृजन के एक नए परिवेश की ओर अग्रसर होती है। यह ऋतु प्रकृति के सौन्दर्य और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है। बसन्त ऋतु के आगमन के साथ ही प्रकृति में एक अद्वितीय बदलाव आता है। इस समय पेड़-पौधे नए पत्तों से लद जाते हैं और फूलों से बगिया महक उठती है। रंग-बिरंगे फूलों की बिछी चादरें, ताजगी से परिपूर्ण संगीत और ठण्डी हवाएँ जीवन में एक नया उत्साह और ऊर्जा लाती है। विशेषकर बागानों और खेतों में सरसों, तुलसी और गुलाब जैसे फूल खिलते हैं जो धरती को रंगीन और आकर्षक बना देते हैं। ये सुखद परिवर्तन जीवन के नवीनीकरण का प्रतीक होते हैं।

भारत में बसन्त ऋतु को सांस्कृतिक रूप से बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस समय कई प्रमुख त्यौहार मनाए जाते हैं, जैसे - 'बसन्त पञ्चमी', 'होली' और 'माघी संक्रान्ति'। 'बसन्त पञ्चमी' का त्यौहार भारतीय संस्कृति में विशेष रूप से मनाया जाता है। इस दिन देवी सरस्वती की पूजा की जाती है जो ज्ञान, कला, संगीत और साहित्य की देवी मानी जाती हैं। यह दिन विद्यार्थियों, कलाकारों और

शास्त्रज्ञों के लिए विशेष आशीर्वाद का दिन होता है। इसके अलावा बसन्त ऋतु में होली का त्यौहार भी आता है जो प्रेम, भाईचारे और मिलनसारिता का प्रतीक है। विविध वर्णों से परिपूर्ण इस होली में बसन्त के रंगों का गहरा सम्बन्ध है क्योंकि रंगों की चादर ओढ़े बगिया इस मौसम में खिल उठती है। होली के दौरान लोग एक-दूसरे को रंग लगाते हैं और पुराने गिले-शिकवे दूर करते हैं जो समाज में एकता और सामूहिक भावना को बढ़ावा देता है। भारत के काव्य-साहित्य में बसन्त ऋतु का स्थान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। कवियों ने इस ऋतु को अपनी रचनाओं में सुंदरता, प्रेम और प्रसन्नता का प्रतीक माना है। कालिदास के 'ऋतुसंहार' ग्रंथ में बसन्त ऋतु का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। हिंदी साहित्य (काव्य) में भी सूरदास, बिहारीलाल और मीराबाई जैसे संत कवियों ने बसंत ऋतु के सुंदर चित्रण किए हैं। बसंत का मौसम प्रेम और सुंदरता की अभिव्यक्ति के रूप में दिखाया गया है। बसंत ऋतु का असर न केवल बाहरी वातावरण पर होता है, बल्कि यह मानसिक स्थिति पर भी प्रभाव डालता है। इस समय वातावरण में ताजगी और सुखद ऊर्जा का संचार होता है, जो व्यक्ति को शान्ति और मानसिक प्रसन्नता प्रदान करता है। ठण्डी हवाओं के साथ सुहावनी धूप व्यक्ति को ऊर्जा से भर देती हैं जिससे व्यक्तियों में अप्रत्याशित उत्साह आता है और वे रचनात्मकता की ओर अग्रसर होते हैं। प्राकृतिक रूप से बसन्त ऋतु प्रेम की भी ऋतु मानी जाती है। जिस प्रकार पेड़-पौधे सर्दियों के बाद नए पत्तों और फूलों से सजते हैं, वैसे ही हमें भी कठिनाइयों और दुखों के बाद नए विचारों और उम्मीदों के साथ जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। यह इस ऋतु का सन्देश भी होता है। बसन्त ऋतु न केवल प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक है, बल्कि यह मानसिक शान्ति, प्रेम और नवीनीकरण का भी समय है। यह समय हमें प्रकृति से जुड़ने और जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा देता है। बसन्त ऋतु कविताएँ, लेख, संगीत, चित्रण, मूर्तन और अन्य अनेक विधाओं में रचने को प्रवृत्त करता है। यह समय न केवल हमारी धरती, बल्कि हमारे दिलों को भी प्रेम, ऊर्जा और नवीनीकरण से भर देता है। इसलिए प्रकृति और देवी सरस्वती के इस सन्देश से अनुप्राणित हो 'कला दीर्घा' बीस कलाकारों को जोड़ते हुए एक मंच पर लाकर बासन्ती रूप-रंगों के सृजन से कलाप्रेमियों में ऊर्जा और सकारात्मकता का संचार करेगी, ताकि वे ऊर्जा से लबरेज सृजन-पथ पर आगे बढ़ें और यथायोग्य समाज और राष्ट्र के विकास में अवदान दें।

बताते चलें कि 'कलादीर्घा' भारतीय कलाओं के विविध स्वरूपों का दस्तावेजीकरण और उसके प्रसार के उद्देश्य से सन 2000 में स्थापित, दृश्य कलाओं की अन्तरदेशीय कला पत्रिका है जो अपनी उत्कृष्ट कला-सामग्री और सुरुचिपूर्ण-कलेवर के कारण सम्पूर्ण कलाजगत में महत्त्वपूर्ण पत्रिका के रूप में दर्ज की गई है। अपने स्थापनावर्ष से लेकर आज अपनी यात्रा के रजत जयन्ती वर्ष पूर्ण करने तक पत्रिका ने उत्साहपूर्वक लखनऊ, पटना, भोपाल, जयपुर, बंगलौर, नई दिल्ली, लंदन, बर्मिंघम, दुबई, मस्कट आदि महानगरों में अनेक कला-गतिविधियों का उल्लेखनीय आयोजन किया है और आगे भी सोल्लास अपने दायित्वों का निर्वहन करती रहेगी। पत्रिका ने समय-समय पर वरिष्ठ कलाकारों के कला-अवदान का सम्मान करते हुए युवा कलाकारों को अपनी अभिव्यक्ति और नित नए प्रयोगों को कलाप्रेमियों के समक्ष प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया है। हाल में ही आयोजित कला प्रदर्शनी 'हौसला', 'वत्सल' 'समर्पण' और 'ढिबरी' के उपरान्त आज फिर 'बसन्त' प्रदर्शनी के साथ उपस्थित है।

आशा है चित्र-प्रदर्शनी आपको सांगीतिक स्पन्दन, ऊर्जा और उत्साह से लबरेज कर देगी।

Leena Mishra

(डॉ लीना मिश्र)